दिल्ली-लोधी रोड। विश्व पर्यावरण दिवस पर कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया में आयोजित कार्यशाला के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य सतर्कता अधिकारी ए.के. पोद्दार, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा व अन्य।

दिल्ली-नरेला। नशा मुक्ति कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए दादी रुक्मणि, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. कवि, प्रधान रूपचंद दहिया, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

शाहकोट-फिल्लौर(पंजाब)। योग दिवस पर कार्यक्रम के दौरान योग की 12 क्रियाओं के बारे में बताते हुए एपेक्स स्कूल की प्रिन्सीपल वंदना बहन। साथ हैं नवयुग संस्था के प्रधान मठारू भाई, ब्र.कु. राज बहन और ब्र.कु. लेखराम।

खोर्धा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए पूर्व सांसद तथा संबाद के संपादक सौम्यरंजन पट्नायक। साथ हैं ब्र.कु. अनु एवं ब्र.कु. जयकृष्ण।

चौधरी बागान-हरमू रोड। पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण करते हुए नगर आरक्षी अधीक्षक कौशल किशोर, रेडिसन ब्लू की निदेशिका नंदिनी गुप्ता, ब्र.कु. निर्मला, आर.डी.सिंह, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के पूर्व अध्यक्ष रंजीत जी व लघु उद्योग संघ के मानद सचिव दीपक मारू।

गुमला-झारखण्ड। भारतीय स्टेट बैंक में योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए उपायुक्त श्रवण राय, मुख्य प्रबंधक रवि प्रकाश, ब्र.कु. शान्ति व अन्य।

बुद्धि बड़ी है, ना कि भाग्य और ना ही पुरुषार्थ

गतांक से आगे...

आज हम आपको एक और सत्य बताते हैं। `न पुरुषार्थ बड़ा है ना प्रालब्ध बड़ी है' तो कौन बड़ा है? एक बहुत सुंदर कहानी बताती हूँ - एक बार एक जंगल में तीन व्यक्तियों की आपस में बहुत बड़ी बहस हो रही थी। हरेक कहे मैं बड़ा, मैं बड़ा, मैं बड़ा, तीनों की इतनी आपस में बहस हो रही थी। तभी वहाँ से राजा गुज़र रहे थे। उसने सोचा कि मेरे राज्य में ऐसे इतनी बहस करने वाले कौन हैं? कौन हैं ये व्यक्ति जो अपने आपको बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे हैं? तीनों व्यक्ति राजा के पास आए और कहने लगे राजा अब आप ही हमारा फैसला करो कि हम तीनों में बड़ा कौन है। राजा ने कहा कि पहले आप अपना परिचय तो दो कि आप कौन हो? तो पहले व्यक्ति ने कहा - मैं कर्म हूँ, पुरुषार्थ हूँ, दूसरे ने कहा - मैं भाग्य हूँ, प्रालब्ध हूँ, तीसरे ने कहा मैं बुद्धि हूँ। अब आप हमें फैसला करके बताइये कि हम तीनों में बड़ा कौन है? राजा ने कहा ऐसे मैं कैसे फैसला कर लूं। पहले आप को अपने आप से प्रमाणित करना पड़ेगा कि आप तीनों में से बड़ा कौन है? जो प्रमाणित होगा, उसी को बड़ा, हम फैसला देंगे। तीनों को एक-एक सप्ताह मिलता है अपने आप को प्रमाणित करने का। वहाँ से एक लकड़हारा जा रहा था, राजा ने कहा इस लकड़हारे पर अपना प्रयोग करो और अपने आप को प्रमाणित करो। सबसे पहले पुरुषार्थ ने कहा कि मैं उसमें प्रवेश करता हूँ, एक हफ्ते बाद मैं आपको अपना परिणाम बताऊंगा। सर्वप्रथम पुरुषार्थ ने प्रवेश किया। उस लकड़हारे में ऐसी शक्ति आ गयी कि उसने एक दिन में दो दिन की लकड़ी काट दी। अभी बुद्धि साथ नहीं है और न भाग्य साथ है। अब उस लकड़े को उठाने की क्षमता उसमें नहीं थी कि उसे बाज़ार ले जाये और उसको बेचे, तब तो उसको अधिक पैसे मिलें। काट तो दिए उसने लेकिन बुद्धि नहीं है, प्रालब्ध नहीं है, भाग्य नहीं है। तो क्या करें?

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

उसने सोचा कि आधे लकड़े को उठा ले जाता हूँ और आधे को यहां छुपा देता हूँ। जब वह उसे बेचकर के वापिस आया तो देखता है कि छुपाये हुए लकड़े तो वहाँ हैं ही नहीं, अर्थात् चोरी हो गए। भाग्य साथ नहीं था! ऐसा पूरे सप्ताह चलता रहा। हफ्ते के बाद देखा कि उसकी स्थिति वैसी की वैसी ही थी। कई बार संसार में, कई लोग पुरुषार्थ बहुत करते हैं, लेकिन फिर भी स्थिति वैसी की वैसी ही रहती है, सुधरती नहीं है। एक सप्ताह बाद भाग्य को प्रवेश करना था। तब कर्म बाहर निकल आया और भाग्य ने प्रवेश किया।

भाग्य के प्रवेश करते ही उसकी लॉटरी लग गई। उसने सोचा कि मैं काम क्यों करूं? लकड़ा क्यों काटूं, तो उसने लकड़ा काटना ही छोड़ दिया। सोचा इतना पैसा है, मैं ऐशो-आराम क्यों न करूं। खूब ऐश करने लगा क्योंकि बुद्धि तो थी नहीं कि पैसे को कैसे यूज़ करना चाहिए। बुद्धि नहीं थी, कर्म करने की शक्ति चली गई, तो जो पैसा आया था उसको उड़ाना चालू किया। हफ्ते के अंदर तो उसने सारे पैसे खत्म कर दिये। हफ्ते के बाद उसकी स्थिति वैसी की वैसी ही हो गयी। उसके बाद तीसरे हफ्ते में बुद्धि को प्रवेश करना था।

अब जैसे ही बुद्धि ने प्रवेश किया तो उसने सबसे पहले कुल्हाड़ी की धार तेज की। अब तो रोज़ जो लकड़ा काटता था। उससे उसने डबल लकड़ा काट लिया एक दिन में, क्योंकि कुल्हाड़ी की धार तेज़ थी। अभी भी भाग्य साथ नहीं है, कर्म भी साथ नहीं लेकिन बुद्धि है। बुद्धि की शक्ति से उसने डबल लकड़ा तो काट लिया। अब काटने के बाद बुद्धि चलाने लगा कि पिछली बार तो सब चोरी हो गए थे। इसलिए अभी तो छोड़कर जाना नहीं है। बुद्धि की शक्ति से उसने जंगल से लताओं को तोड़ा चार-पांच लकड़े को आपस में बांध करके तगाड़ा जैसे ऐसा बनाया कि उसे आराम से खींच सके। उसके अंदर वो सारे लकड़े को खींचकर के शहर लेकर गया। यह तो ज़ाहिर है कि ज़्यादा लकड़े थे तो ज़्यादा पैसे मिले होंगे। उसने उन पैसों से एक और कुल्हाड़ी खरीद ली। अब दो कुल्हाड़ी हो गयी। अब दोनों कुल्हाड़ी की धार उसने तेज़ की। अब वो निश्चित रूप से एक दिन में चार दिन की लकड़ी काट सकता है, और उसने काटा। ऐसे ही एक हफ्ते तक कुल्हाड़ी की धार तेज़ करता गया और तगाड़े बनाकर लकड़ियाँ शहर ले जाता गया। हफ्ते के बाद उसकी स्थिति बेहतर हो गयी। कारण क्या? बुद्धि से उसने कर्म किया। और बुद्धि से कर्म करते ही पुरुषार्थ और भाग्य दोनों साथ आ गये। - क्रमशः

जीवन की ... - पेज 2 का शेष...

हमारे पास दृष्टि होने के बावजूद हम चारो ओर देखने का कष्ट उठाने को तैयार नहीं होते। परिणाम स्वरूप गड्ढे में गिर पड़ते हैं। अंधा मनुष्य न देखते हुए भी गड्ढे में नहीं गिरता, क्योंकि वो अपने कान खुले रखता है और एक-एक कदम का हिसाब रखता है। संसार में सर्राफा बाज़ार में हीरा भी है और झूठे बने नग भी। आप अपनी परख दृष्टि को अलविदा कह दो तो आपके हाथ में हीरे के बदले पत्थर ही आयेगा। मनुष्य को अपनी ज़्यादा शक्ति बाह्य बातों के बजाय अंदर की ओर यूज़ करना चाहिए। बाहर की तरह अंदर भी एक न्यायालय चलता है।

किसी कवि ने कहा है, 'तुम्हारे हाथों में ही फैसला है।' उतावलेपन से कार्य करने को हम जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं। उतावलेपन से अभिप्राय- उतावलेपन से मूल्यांकन, उतावलेपन से निर्णय और उतावलेपन से राग-द्वेष के चक्र, ये सभी मनुष्य की मानसिक कमज़ोरी है जोकि पश्चाताप की भूमिका का सर्जन करती है। ऐसे उतावलेपन में हठ, अहं वृत्ति और सोचा हुआ परिणाम तत्काल प्राप्त करने की आदत कार्य करती है।

जीवन की पाठशाला के सच्चे विद्यार्थी बनने के लिए कुछ बिन्दू:- 1. उत्तम और सात्विक वचन की आदत को गढ़ो। 2. दूसरों के अनुभव और भूलों से सीखने की दृष्टि विकसित करो। 3. योग्य निर्णय लेने की कला को विकसित करो। अपनी समस्या के निवारण के लिए समझदार मनुष्य के साथ परामर्श कर हल निकालो। 4. मैं सबकुछ जानता हूँ ऐसे भ्रम से मुक्त हो जाओ। 5. सकारात्मक, आशावादी और खुले मन से आई हुई समस्याओं का निराकरण करो। 6. प्रसन्न मन, ये आधी लड़ाई जीतने के बराबर है, इसलिए खुशी के स्रोत को बढ़ने दो। 7. रोज़ खुद एकांत में बैठकर अपने अंदर कुदरत द्वारा प्राप्त शक्तियों तथा योग्यताओं को देखो और उनका उपयोग करो।

ख़्यालों के आईने में...

एक छोटी सी चींटी आपके पैर को काट सकती है, पर आप उसके पैर को नहीं काट सकते!
इसलिए जीवन में किसी को छोटा ना समझें, क्योंकि वह जो कर सकता, शायद आप ना कर पायें!!

कामयाब इंसान खुश रहे ना रहे, खुश रहने वाला इंसान कामयाब ज़रूर हो जाता है।

ईश्वर कहते हैं...
किसी को तकलीफ देकर मुझसे अपनी खुशी की दुआ मत करना...
लेकिन अगर किसी को एक पल की भी खुशी देते हो तो...
अपनी तकलीफ की फिक्र मत करना!!